एक कचोटती याद

❑ सुमन सैनी

एक बच्चे का मन किन कठिनाइयों,दुविधाओं और विवशताओं से जूझता है, यह जानना वयस्कों के लिए थोड़ा मुश्किल है । लेकिन बिडम्बना यह है कि वयस्क अक्सर बच्चों के अनुभवों को लेकर उदासीन रहते हैं । प्रस्तुत प्रसंग एक बच्चे के भीतर चलती हलचल और उसकी बाह्य परिणति को उद्घाटित करता है । यह विषय जीवन स्थितियों के असर की बचपन पर पड़ी वह खरोंच है जिसका निशान आगे तक मिटता नही हैं ।

यह राजू के बचपन की एक कचोटती याद है जो उसने मुझे सुनाई । राजू 6 वर्ष का हुआ था तो उसे पास के सरकारी स्कूल में पहली कक्षा में दाखिल करा दिया गया । राजू के मां बाप गरीब थे परन्तु उन्होंने राजू के बड़े भैया को जैसे-तैसे हायर सैकेण्डरी तक पढ़ा दिया था । भैया शहर में क्लर्क की नौकरी कर रहा था । किन्तु परिवार में और चार भाई बहनों की जिम्मेदारी बाकी थी । सबको जैसे तैसे गांव के सरकारी स्कूल में दाखिला दिला दिया । राजू से छोटी दो बहनें थीं । एक बहन राजू से बड़ी थी । सरकारी स्कूल में यूनीफार्म थी। लड़कों के लिए सफेद कमीज खाकी नेकर और लड़कियों की नीली घघरी और सफेद ब्लाउज । सिर्फ एक यूनिफार्म ही सब बच्चों के पास हुआ करती थी । कई लड़के तो फटी हुई नेकर पहन कर स्कूल आया करते थे । अधिकांश नंगे पैर ही स्कूल आते थे। उस समय ग्रामीण परिवेश में बच्चों को स्कूल में पढ़ाना ही एक बड़ी बात थी ।

राजू पढ़ने में होशियार था जबकि उसकी बहनें सामान्य थी। शिक्षक उसे बहुत प्यार करते थे । उसे गरीबी का कोई आभास ही नहीं था क्योंकि सभी छात्र उसी के जैसे थे ।

राजू और उसके साथी एक साथ विद्यालय जाते थे । समय से एक घण्टे पूर्व ही खेतों की मेंड पर सारे साथी जमा हो जाते । पगडण्डी से गुजरते हुये बेर की झाडी से बेर तोड़कर खाते, तो कभी कच्चे आमों को पत्थर मारकर तोड़ते । इस अभियान में गुलेल बड़ी मददगार साबित होती थी और निशानेबाजी में सब एक से बढ़कर एक उस्ताद !

मिट्टी के तवे पर बनाई हुई चूल्हे की मोटी मोटी रोटियां, गुड़ और प्याज के साथ कपडे के चौकोर टुकडे में बांधकर बस्ते के किसी कोने में रख दी जाती थी । खेल घण्टी में उन्हे साथियों के झुंड में बैठकर खाया जाता । राजू भी उस रोटी को बड़ी मिठास और तृप्ति के साथ खाता।

पहले खेतों में सिंचाई करने के लिए कुओं के पास हौद हुआ करते थे । स्कूल से लौटते समय राजू व उसके साथी हौद में नहाया करते थे । तैराकी की कला उसने वहीं से सीखी, कौन पहले एक कोने से दूसरे कोने को छूकर आये । यह प्रतिस्पर्धा राजू को तैरने में पारंगत करती गई ।

राजू ने पांचवी कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । गांव का स्कूल प्राथमिक स्तर तक था । आगे की पढ़ाई के लिए उसे अन्यत्र प्रवेश दिलाना था । उसके साथी छात्रों ने दूसरे गांव के सरकारी विद्यालय में ही प्रवेश लेने का निश्चय किया। किन्तु राजू के भैया ने उसे शहर के एक अच्छे स्कूल में पढ़ाने का निर्णय किया। वहां उन्हें दो विद्यालय अच्छे लगे । एक केन्द्रीय विद्यालय और दूसरा एक प्राइवेट स्कूल। केन्द्रीय विद्यालय में प्रवेश मुश्किल था। अत: उसके भैया ने प्राइवेट स्कूल में दाखिले का तय किया। राजू का फार्म जमा करवाकर टैस्ट दिलाया गया, इसमें वह उत्तीर्ण हो गया। उसके भैया ने उसकी फीस जमा करवा दी और उसे प्रवेश मिल गया । इस विद्यालय में पास के सरकारी क्वाटरों के बच्चे एवं शहरी लोगों के बच्चे पढ़ते थे ।

राजू ग्रामीण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखता था। अत: उसे यहां अटपटा लगता। वहां पर सभी बच्चे यूनीफार्म में आते थे । सफेद शर्ट व नीला नेकर विद्यालय गणवेश में शामिल था। राजू को भी एक यूनीफार्म सिलवाकर दी गयी। काले जूते व सफेद मोजे भी दिलवा दिये गये।

राजू को नये स्कूल का वातावरण पुराने स्कूल से भिन्न नजर आया । मासूम राजू उस नये वातावरण में खुद को सहमा सा महसूस करता। वहां के बच्चे बोलने में बडे तेज थे । उनकी बातचीत की भाषा भी भिन्न थी, उनका रहन-सहन भी अलग था। उनके बैठने चलने, खाने-पीने आदि तरीके अलग थे, जिनसे राजू अनभिज्ञ था। राजू का पारिवारिक माहौल ठेठ ग्रामीण था। भाषा भी आंचलिक बोली जाती थी । राजू के बाल मन में काफी प्रभाव पड़ने लगा । वह उन बच्चों को अपने से श्रेष्ठ समझने लगा, उसमें हीनभावना घर कर रही थी ।

राजू अब नये माहौल में स्वयं को व्यवस्थित करने में लग गया। वह घर पर कुछ चीजों की जिद करने लगा। छोटी-छोटी

बातों का राजू के बाल मन पर प्रभाव पड़ता था। वह खाने में पतली रोटी और सब्जी के साथ अचार की मांग करने लगा। घर में किसी को कहां फुरसत थी और सही मायने में वैसी रोटियां उन्हें बनानी भी नहीं आती थीं । सो राजू को स्कूल में खाना खाने में बड़ी शर्मिन्दगी महसूस होती । वह अच्छा खाना ले जाने की तोतारट लगाये रहता। सारे बच्चे अपना अपना खाना खाते थे । कोई भी बच्चा एक दूसरे से बांटकर नहीं खाता था। राजू को यह नया अनुभव हो रहा था । वह ठीक से खाना खा ही नहीं पाता था ।

स्कूल प्राइवेट था, इसलिए यहां अध्यापक, अध्यापिकाएं भी सरकारी स्कूल से हटकर थे । उनका व्यवहार भी बच्चों के प्रति भिन्न था । वे बच्चों से पक्षपात पूर्ण तरीके से पेश आते थे। राजू पढ़ने में होशियार था, किन्तु फिर भी अध्यापक उसे महत्व नहीं देते थे । वे राजू जैसे बच्चों की उपेक्षा कर कुछ खास बच्चों को ज्यादा महत्व देते थे ।

शुरू में राजू को काले जूते व सफेद मोजे दिलवाये थे, लेकिन बाद में जब जूते टूट गये तो राजू के पास चप्पल भी पहनने को नहीं थी । गांव में अधिकांश बच्चे नंगे पांव ही स्कूल जाते थे। अत: राजू के मां बाप ने भी कह दिया कि अभी तंगी है । नंगे पाव ही स्कूल चला जा । स्कूल में बच्चे चप्पल जूते खोलकर प्रार्थना में जाया करते थे । राजू ने सोचा नंगे पैर स्कूल जाऊंगा तो साथी हंसी उडायेंगे । उसने उपाय सोचा क्यों न घर से एक घण्टे पहले ही स्कूल के लिए रवाना हुआ जाये ताकि रास्ते में कोई साथी उसे नंगे पैर नहीं देखे । चूंकि स्कूल में तो सभी बच्चे चप्पल जूते उतारकर ही बैठते हैं । अत: किसी को पता नहीं लगेगा कि वह चप्पल पहन कर नहीं आता है। वह ऐसा ही करने लगा, किन्तु वह कक्षा से बाहर ही नहीं जा पाता था। मैदान में सभी बच्चे खेलने जाते थे तो अपने अपने चप्पल जूते पहनकर जाया करते थे। उसको नंगे पांव जाने में पोल खुलने एवं शर्मिन्दा होने का भय था।

जबकि राजू की भी खेलने की तीव्र इच्छा होती उसने सोचा कि अधिक समय इस तरह काम नहीं चल सकता, उसे स्कूल जाने में मजा नहीं आ रहा था। वह गुमसुम रहने लगा, एक दिन वह भैया से चप्पल दिलाने के लिए बोला लेकिन भैया ने यह कहकर टाल दिया कि अब तो दो महीने की ही तो बात है । अगले साल नये जूते दिलवा दूंगा । एक साल तो ऐसे ही निकाल लो ।

राजू गर्मी के मौसम में छाया ढूंढता हुआ समय से काफी समय पहले स्कूल जाया करता । इस तरह उसकी परेशानी बढ़ती ही गयी ।

एक दिन उसको एक उपाय सूझा, क्यों न राधा भाभी की चप्पल चुरा ली जायें ।

राजू येन-केन प्रकारेण चप्पल चुराने की योजना बनाने लगा। उसे मालूम था कि भाभी चप्पल कहां रखती है । एक दिन संध्या को भाभी छत पर रोटी बना रही थी। राजू को चप्पल चुराने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था । उसने भाभी की चप्पल पुदीने की क्यारी में डाल दीं। और जब उसे किसी खतरे का अन्देशा नहीं हुआ तो वह चप्पल रास्ते की एक झाड़ी में छुपा आया। फिर विजेता की भांति दूसरी सुबह का इन्तजार करने लगा कि वह चप्पल पहनकर स्कूल जायेगा । अब वह घर से नंगे पांव अकेला स्कूल के लिए चलता। झाड़ी से चप्पल निकाल कर पहनता और स्कूल जाता । वापसी पर फिर से झाड़ी में रख देता। घर में सभी एक दूसरे के चप्पल जूते पहचानते थे इसलिए राजू चप्पल झाडी के पीछे छुपाकर रखता था। राजू नंगे पांव ही घर लौटता था। यह चोरी करने से वह परेशान तो रहता किन्तु उतना नहीं जितना बिना चप्पल के वह साथी बच्चों के बीच रहता था ।

इस तरह राजू जीवन में अनेक विषमताओं के बीच बी. ए. पास कर सरकारी नौकरी करने लगा । मगर जब भी उसे चप्पल वाली घटना याद आती है तो वह उसके अंत:करण को झिंझोड़ डालती है कि मजबूरी कैसे चोरी जैसा कृत्य करवाती है । जब कभी अखबार में वह चोरी की खबर पढ़ता है तो उसे अपना चप्पल चुराना याद हो आता है ।

यह एक घटना उसका आज तक पीछा कर रही है । वह सोचता है कि क्या आज भी स्कूलों में बच्चों को ऐसी कचोटने वाली विवशताओं से जूझना पड़ता है ? ◆